ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो विकास कर्मी होय

कमला भसीन

आजकल गांवों और शहरों की ग़रीब बस्तियों में बहुत सारे विकास कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। कहीं सरकार की तरफ से, कहीं ग़ैर-सरकारी संस्थाओं की तरफ से। लाखों विकास कर्मी अपने-अपने तरीके से अलग-अलग विकास योजनाएं चला रहे हैं। कोई कृषि सुधार में लगे हैं, तो कई जंगलात लगवा रहे हैं, कोई शिक्षा का काम कर रहे हैं, कोई सेहत का, कोई व्यवसायों में प्रशिक्षण दे रहे हैं तो कोई पर्यावरण रक्षा का काम कर रहे हैं। कुछ और हैं जो महिला चेतना का काम कर रहे हैं। कुछ मज़दूर तबके को उचित मज़दूरी के लिए संगठित होने को प्रेरित कर रहे हैं।

समुदायों के साथ काम करने वालों के लिए बहुत से 'मैनुअल्स' निकाले जा रहे हैं जो उन्हें बताते हैं कि लोगों के साथ कैसे काम किया जाए, उन्हें शिक्षा कैसे दी जाए या संगठित कैसे किया जाए। इस बारे में आज मैं अपने कुछ विचार आप तक पहुंचा रही हूं।

मेरा अनुभव

मैं विकास कार्यों के साथ खास तौर से स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा किए जा रहे कार्यों के साथ, लगभग पिछले बाईस वर्ष से लगी हूं। 1972 में मैंने सेवामंदिर नाम की एक संस्था के साथ राजस्थान के उदयपुर ज़िले में काम करना शुरु किया था या यूं कहिए 1972 में मेरी सही मायने में शिक्षा शुरु हुई थी। वहां जा कर लगा कि यूनीवर्सिटी में जो कुछ पढ़ा था वो काफ़ी हद तक बेमायने था, उसका देश की असली समस्याओं के साथ कम ही लेना देना था और उस शिक्षा में मुझे किसी भी तरह से गांवों व बस्तियों में काम करने के लिए तैयार नहीं किया था। चार साल मैंने गांवों में काम किया। बहुत ग़ल्तियां की, मगर उनसे सीखने की कोशिश की। 1976 से मैं विकास कर्मियों की शिक्षा, उनके प्रशिक्षण के साथ जुड़ी हूं।

सही रवैया अपनाएं

इन बाईस-तेईस बरसों में मैंने यह जाना है कि लोगों को साथ काम करने के लिए जो सबसे अहम् बात है वो है हमारा लोगों के प्रति रवैया। हम क्या सोचते हैं उस ग़रीब तबके के बारे में जिनकी मदद करने की कोशिश हम कर रहे हैं। मैंने देखा है बहुत से लोग ग़रीब तबके को निरक्षर होने के साथ-साथ अज्ञानी और अशिक्षित भी समझ लेते हैं जबकि निरक्षर व्यक्ति बहुत ज्ञानी व कई मायनों में शिक्षित होते हैं। कई विकास कर्मी यह मान कर चलते हैं कि वे लोगों का विकास करने जा रहे हैं। वे जानते हैं लोगों की समस्याएं और उन समस्याओं के समाधान। वो अपना काम यही मानते हैं कि वो लोगों तक अपना ज्ञान, अपने समाधान पहुंचा दें।

उनके व्यवहार से यह ज़ाहिर होता है कि आम लोगों के दिमाग़ खाली घड़े हैं जिनमें उन्होंने अपने ज्ञान का जल भरना है। मेरे विचार में यह रवैया ग़लत ही नहीं, खतरनाक है। मेरा अपना यह मानना है कि कोई भी किसी और का विकास नहीं कर सकता, हां सहायता कर सकते हैं, हाथ बंटा सकते हैं, दूसरे का विकास नहीं कर सकते, सहयोगी हो सकते हैं।

प्यार व विश्वास जरूरी

मैं यह भी मानती हूं कि मैं सिर्फ उसकी मदद कर सकती हूं जिसकी मैं इज्ज़त करती हूं, जिससे मुझे स्नेह है, लगन है। जिसे मैं हीन या अज्ञानी समझती हूं, मैं कदापि उसके विकास में सहयोगी नहीं हो सकती। अगर मैं कबीर की वाणी का प्रयोग करूं तो मैं कहूंगी कि असल विकास के लिए सबसे बड़ा गुर है प्यार। हमारे काम का आधार अगर प्यार है तो काम होगा, अगर दया, दान है तो विकास नहीं होगा; थोड़ी बहुत मदद होगी पर लोगों का विकास नहीं होगा।

कबीर कहते हैं—

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ हुआ न पंडित कोई
ढाई आखर प्रेम का पढ़े जो पंडित होई।

मैनुअल्स की जगह ढ़ाई आखर प्रेम के पढ़ लें और समझ लें तो बात बन जाए। प्रेम समझ में आ जाए तो बाद में चाहे मैनुअल्स या अनुदेशिकाएं भी पढ़ लें। प्यार का अर्थ सिर्फ लगाव या मोह नहीं है। प्यार का अर्थ है दूसरे व्यक्ति के प्रति समझ, दूसरे व्यक्ति में आस्था व विश्वास। विश्वास, आस्था, समझ पर आधारित प्रेम होगा तो हम विकास में सहयोगी बन पाएंगे, लीडर बने ही नहीं घूमते रहेंगे। अगर हम शिक्षा में काम कर रहे हैं तो सिर्फ़ शिक्षक बने ही नहीं इठलाते रहेंगे। हर शिक्षक को, खास तौर से हर प्रौढ़ शिक्षक को यह मान कर चलना होगा कि वह शिक्षक भी है, शिष्य भी। कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं है जो सब जानता हो और शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति है जो कुछ नहीं जानता। शिक्षा कर्मियों के लिए जबरदस्त गुर मुझे एक शेर में दिखता है—

जो इल्म की इबारत चेले की आंख में थी
बस हम उसी को पढ़ कर उस्ताद बन गए हैं।

चेले की आंखों में झांके बिना, उन आंखों की इबारत को समझे बिना कोई भी अच्छा उस्ताद नहीं बन सकता या बन सकती। सिखाना है तो पहले आंखों को पढ़ना होगा, उनसे सीखना होगा और फिर इल्म का दौर शुरू हो सकता है। इस दौर में गुरु और चेला दोनों सीखते हैं, दोनों विकसित होते हैं, दोनों पनपते हैं। जो उस्ताद खुद रोज़ नया नहीं सीखते वे भला औरों को क्या दे सकते हैं। हां, विचारों की उतरन दे सकते हैं, बासी ज्ञान दे सकते हैं, पर ज्ञान की ललक नहीं दे सकते। शिक्षा और विकास के सफ़र मे हमें लोगों का हमसफ़र बनना होगा, सिर्फ़ मार्ग दर्शक नहीं।

लोगों की बात सुनें

जिन लोगों के साथ हम काम कर रहे हैं वो हज़ारों सालों से जी रहे हैं, शोषण के बावजूद, अन्याय के बावजूद। उन हालात में जी रहे हैं तो ज़रूर वो अकलमन्द ही नहीं, जुझारू भी हैं। पैसे और साधनों से उन्हें ज़रूर ग़रीब बना दिया गया है पर वो और कई मायनों में अमीर हैं। उनकी समस्याएं उन से बेहतर कोई नहीं जानता। स्थानीय राजनीति उनसे बेहतर कोई नहीं समझता। विकास कर्मियों के लिए ज़रूरी है कि वो पहले लोगों की

सुनें, फिर अपनी कहें। अगर हम ठीक से सुनना सीख लें तो हमारी आधी समस्या यूं ही ठीक हो जाए। अगर लोगों की बात सरकारें व दूसरे हाकिम सुन लें और मान लें तो अपने आप उचित विकास हो जाए, हमारे जैसों की ज़रूरत ही कम हो जाए।

ज़रूरत है लोगों की स्थानीय समझ, उनके ज्ञान और विकास कर्मियों के बाहरी ज्ञान, विस्तृत जानकारी के संगम की। दोनों धाराएं मिलें और आगे बढ़ें।

भागीदारी व आत्म-सम्मान

यह तो आज सभी मानते हैं कि लोगों पर योजनाएं थोपी नहीं जा सकतीं। लोगों की सच्ची भागीदारी के बिना सतत विकास असंभव है। विकास एक पेड़ जैसा है, जो तभी हरा-भरा होगा जब उसकी जड़ें ज़मीन में होंगी, जब वो नीचे से ऊपर की तरफ बढ़ेगा, जब पेड़ स्थानीय आबो-हवा देख कर चुना गया होगा और जब जिनके आंगन में वो पेड़ लगाया गया है वो उसे अपना समझेंगे। अगर ऐसा नहीं है तो विकास योजना सरकार की होगी, किसी संस्था की होगी, लोगों की नहीं।

विकास कर्मियों का काम है लोगों की अपनी शक्ति को पहचान कर उसे निखारने की कोशिश करना, उनके आत्म ज्ञान, आत्म-सम्मान को निखारना। उन्हें वो सूचना या ज्ञान उपलब्ध कराने का तरीका बताना जिसकी उन्हें ज़रूरत है, जिसे पा कर वो सशक्त हो सकते हैं, बेहतर जीवन जी सकते हैं।

कबीर के शब्दों में विकास कर्मियों का काम सूप के जैसा होना चाहिए—

पंडित ऐसा चाहिए जैसा सूप सुहाए
सार-सार सब गहि लहे थोथा दे उड़ाए

हम उनके मतलब की बात उन तक पहुंचा दें, ताकि भूसे में उन्हें अनाज न ढूंढना पड़े। यानि उनके काम की जो सही जानकारी है वह उन तक पहुंचा दें।

विकास कर्मी उनके संगठित होने में भी मदद कर सकते हैं, ताकि वे जल्दी से जल्दी स्वावलम्बी हो जाएं, स्वराज पा जाएं। संगठन से बड़ी शक्ति नहीं है और शक्ति के बिना विकास नहीं है। जिस दिन जनता में वह शक्ति आ जाए जिसे कोई नज़र अंदाज न कर सके उस दिन विकास हो जाएगा।

गुर तो वही पुराने हैं, कुछ नया नहीं है। बस इन गुरों को अपनाने और उन को लागू कर पाने की ही बात है। □